भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 **मार्च** 2005 **अंक** 3

हिन्दी के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद आम आदमी के दु:ख दर्दों को व्यक्त करने वाले लेखक थे। इस वर्ष विख्यात लेखक प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती है। प्रेमचंद ने न केवल हिन्दी और उर्दू गद्य को नई दिशा दी, जिसने भारतीय जनमानस की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया, बल्कि उनकी रचनाओं ने आम आदमी के दु:ख-दर्द को हमारे चिन्तन-केन्द्र में ला बिठाया। मुझे आशा है कि हमारे विस्तृत गणराज्य के हरेक स्कूलों के प्रत्येक छात्र प्रेमचंद को नये सिरे से जानेंगे।

—राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

(संसद में 25 फरवरी 2005 को किए अभिभाषण से)

प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती इस वर्ष 31 जुलाई से अगले वर्ष तक मनायी जायगी।

किताबों का विकल्प नहीं। किताब एक ऐसी चीज है, जो हर जगह, हर समय, माचिस की डिबिया की तरह आपके साथ होती है और ये आपकी कल्पना को सबसे खुला छोड़ती हैं। बाकी सारे माध्यम आपको बन्द कमरों की ओर ले जाते हैं, जबकि किताबें खुले मैदानों और कछारों की ओर। **—अरुण कमल**

जरूरी है किताबें

आम लोगों के लिए
जरूरी है वे किताबें
जो उनकी जिन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
कि बारूद की ढेरी पर
आग की चिंगारी।
घर घर तक चिंगारी
छिड़कने वाला
तेज हवा का झोंका
बन जाना होगा
जिन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक पहुँचाना होगा।

—कात्यायनी

काशी की दो विभूतियों का तिरोधान

पं० विद्यानिवास मिश्र

शास्त्र और लोक-संस्कृति के लालित्य का दूसरा नाम पं० विद्यानिवास मिश्र है। प्राचीनता के शाश्वत तत्त्वों से आधुनिकता का सेतु स्थापित करने में विद्यानिवासजी अप्रतिम थे। लोकजीवन और लोकसंस्कृति उनके ज्ञान और अध्ययन का मर्म था। वे मानते थे—''भारत सही मायने में एक भावधारा है जो हर पानी में गंगा का आवाहन करती है।'' यह उनके जीवन का सूत्र था। वे सभी कार्यों से मुक्त होकर काशी में बसने आये। पिछले कुछ वर्षों से 'परिस्पंद' में स्पंद करते रहे। किन्तु उनके मन के कोने में था—''कैसे कहें कि काशी मरने की नगरी है। जीने का स्वाद काशी जानती है, मरने को नकारना काशी जानती है, अमरता को भी ठेंगा दिखाना काशी जानती है।'' यह उनके जीवन में घटित हुआ।

रविवार, 13 फरवरी 2005 को पं० विद्यानिवास मिश्र पूर्वांचल के पकड़ी वीरभद्र नामक एक छोटे से गाँव में कन्याओं के डिग्री कालेज के शिलान्यास के निमित्त पहुँचे। उन्होंने अपने संक्षिप्त सम्बोधन में बसन्त पंचमी को विद्या की आराध्य देवी सरस्वती के जन्मदिन के रूप में स्मरण किया और कन्या महाविद्यालय चलाने वालों को यह संदेश दिया कि बंगाल, मिथिला में संगीत, कला, साहित्य की परम्परागत शैली जीवित है, उस हुनर को जगाया जाय। समारोह के पश्चात उन्होंने अपने सहयोगी मनोज पाण्डेय के साथ क्वालिस गाड़ी से वाराणसी के लिए प्रस्थान किया। गाड़ी मऊ-आजमगढ़ मार्ग पर तेज गति से चल रही थी। तभी बीच मार्ग में एक बालिका को बचाने में गाड़ी सहसा मुड़ी और अनियन्त्रित होकर एक पेड़ से टकरा गई। विद्यानिवासजी और मनोज पाण्डेय का वहीं निधन हो गया। गम्भीर रूप से घायल ड्राइवर को अस्पताल में भरती कराया गया। मिश्रजी की जेब से संसद-सदस्यता का कार्ड मिला। तत्काल प्रशासनिक अधिकारी इकट्ठे हुए, परिवारजनों को सूचना हुई और उनका शव काशी आया—उस काशी में, जिसने जीने का स्वाद जाना, मरने का नहीं।

मिश्रजी का जन्म मकर संक्रान्ति 14 जनवरी 1926 को पकड़डीहा ग्राम में हुआ था। 23 दिसम्बर 2004 को उनकी पत्नी राधिका देवी का निधन हुआ तभी से मिश्रजी जीवन के प्रति उदास हो रहे थे। विद्यानिवासजी एक व्यक्ति नहीं, काशी की पाण्डित्य- परम्परा और साहित्य-संस्कृति-लोक के सिरजनहार थे। उनकी अनुपस्थिति की पूर्ति सम्भव नहीं। वे क्या गये, काशी को सूनी कर गये। 'परिस्पंद' की ओर से गुजरने पर होनेवाली पीड़ा को महसूस किया जायगा। आदिविश्वेश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। उन्हें शिवशंकर का सायुज्य प्राप्त हो।

पं० सीताराम चतुर्वेदी

27 जनवरी 2005 को पं० सीताराम चतुर्वेदी का 98 वर्ष पूर्ण होने पर **वर्द्धापन समारोह** मनाया गया और आशा व्यक्त की गई कि उनकी शती मनाने का सुअवसर प्राप्त होगा। किन्तु विधाता को यह स्वीकार नहीं था। 17 फरवरी 2005 को चतुर्वेदीजी चिन्ताजनक अस्वस्थता के कारण काशी में मरने की कामना से वेदपाठी भवन, मुजफ्फरनगर से काशी लाये जा रहे थे। रास्ते

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्मान-पुरस्कार

बुंदेली साहित्य पुरस्कार

मध्यप्रदेश राज्य विद्युत मण्डल की हिन्दी परिषद ने इस वर्ष का शेख बफाती स्मृति पुरस्कार बुंदेली साहित्यकार **श्री द्वारिकाप्रसाद गुप्त** को प्रदान किया गया। आयोजित समारोह में हिन्दी परिषद के अध्यक्ष श्री संतोष तिवारी ने श्री गुप्त को शाल पहनाकर श्रीफल तथा प्रतीक चिह्न भेंट किया। पुरस्कारस्वरूप एक हजार रुपये की राशि प्रदान की गयी।

मध्यप्रदेश सरकार का साहित्य पुरस्कार

मध्य प्रदेश सरकार ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार **श्री निर्मल वर्मा** को मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया है। 12 फरवरी 2005 को भारत भवन, भोपाल में सम्मानस्वरूप एक लाख रुपये की राशि एवं प्रशस्त्रि पट्टिका प्रदान की गयी।

विवेकी राय को 'सेतु सम्मान'

ग्राम्य जीवन के चितेरे-भोजपुरी से वरिष्ठ साहित्यकार **डॉ० विवेकी राय** को शुक्रवार 18 फरवरी 2005 को गाजीपुर में अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन की ओर से प्रतिष्ठित 'सेतु सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी और महासचिव अरुणेश नीरन ने स्वयं उपस्थित होकर डॉ० राय के आवास पर उन्हें सम्मान प्रदान किया। अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन भोजपुरी साहित्य के रचनाकारों को उनके विशिष्ट योगदान तथा लोकजीवन व लोकसंस्कृति को समृद्ध करने हेतु उन्हें सम्मानित करती है। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी सम्मान के समकक्ष माना जाता है। साहित्य अकादमी के पुरस्कारों में भोजपुरी शामिल नहीं है अत: सम्मेलन भोजपुरी साहित्यकार को साहित्य अकादमी पुरस्कार के समानान्तर राशि 25,000 रुपये का पुरस्कार प्रदान करती है।

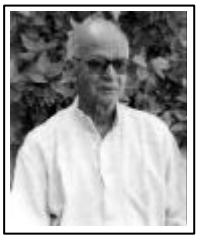

साहित्य अकादमी

अनुवाद के लिए पुरस्कार

साहित्य अकादमी ने वर्ष 2004 के अनुवाद पुरस्कार के लिए 22 अनुवादकों का चयन किया है। प्रत्येक अनुवादकों को बीस हजार रुपये दिये जायेंगे। पुरस्कार वितरण समारोह आगामी अगस्त महीने में होगा।

साहित्य अकादमी फेलो

हिन्दी के सुविख्यात कथाकार **निर्मल वर्मा** और मलयाली उपन्यासकार **केवलिन** को साहित्य अकादमी की फेलोशिप प्रदान करने का निश्चय हुआ है।

इससे पहले अमृता प्रीतम, यू०आर० अनंतमूर्ति, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती और कुर्तुल एन हैदर को यह सम्मान दिया जा चुका है। श्री नारंग के मुताबिक नयी कहानी के जन्मदाता निर्मल वर्मा हिन्दी साहित्य के महान विचारकों में से एक हैं जो अपनी प्रभाव शैली और अलौकिक अनुभूतियों के लिए जाने जाते हैं। निर्मल वर्मा ने पाँच उपन्यास, लघु कहानियों के आठ संग्रह, नौ निबन्ध पुस्तकें और यात्रा वृत्तांत लिखे हैं। श्री कोविलन मलयालम भाषा जगत के जाने-माने कथाकार हैं। उनका वास्तविक नाम कन्दनीसेरी वत्तोमपरम्बली वेलाप्पन अययपन है। श्री कोविलन देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के अलावा ट्रेड यूनियन के नेता भी रहे हैं। उन्होंने 11 उपन्यास, लघु कथाओं के 12 संग्रह निबन्धों के तीन संकलन, और एक नाटक लिखा है।

मलयालम कवि एन बालमणि अम्मा और हिन्दी साहित्यकार विद्यानिवास मिश्र के निधन के बाद रिक्त हुए दो स्थानों पर यह नियुक्ति हुई।

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन वर्ष 2004 के पुरस्कार घोषित

वाचस्पति पुरस्कार

प्रो० रामकरण शर्मा को उनकी काव्यकृति 'गगनवाणी' के लिए एक लाख रुपये का तेरहवाँ वाचस्पति पुरस्कार प्रदान किया जायगा।

बिहारी पुरस्कार

मरुधर के **मृदुल** को उनकी रचना 'आस-पास' पर एक लाख रुपये का बिहारी पुरस्कार दिया जायगा।

डॉ० काशीनाथ सिंह को समुच्चय सम्मान

हिन्दी कहानी को नयी जमीन देनेवाले प्रगतिशील कथाकार **डॉ० काशीनाथ सिंह** को उनके साहित्यिक योगदान के लिए शनिवार, 19 फरवरी 2005 को एक समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार अमरकान्त ने द्वितीय समुच्चय सम्मान प्रदान किया। सम्मानस्वरूप प्रशस्ति-पत्र, पुष्प गुच्छ, अंगवस्त्र व नकद धनराशि दी गयी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के निराला सभागार में आयोजित समारोह में वरिष्ठ कथाकार मार्कण्डेय ने सांस्कृतिक समुच्चय अंक तीन का विमोचन किया।

इस अवसर पर काशीनाथ सिंह ने कहा— इलाहाबाद से मेरा याराना कम, रकीबाना रिश्ता ज्यादा रहा है। अमरकांत और मार्कण्डेय ने भी कभी मेरी कहानियों को बहुत महत्त्व नहीं दिया। इस शहर के इसी तिरस्कार और बनारस के बहिष्कार ने मुझे लेखक बनाया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष और सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो० राजेन्द्रकुमार ने कहा कि जनता जिसको अपनी स्मृतियों में रखेगी, वही साहित्यकार जिन्दा रहेगा। उन्होंने कहा कि डॉ० काशीनाथ सिंह लोक स्मृतियों में रहनेवाले कथाकार हैं, जिन्हें कभी भी भुलाया नहीं जायेगा।

रामदरश मिश्र को महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सम्मान

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की हिन्दीसेवी सम्मान योजना के अन्तर्गत 19 जनवरी 2005 को **रामदरश मिश्र** भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ० ए०पी०जे० अबुल कलाम द्वारा राष्ट्रपति भवन में 'महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सम्मान' से सम्मानित किये गये। सम्मानस्वरूप इन्हें एक लाख रुपये, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

डॉ० विनयकुमार मालवीय को जयशंकरप्रसाद पुरस्कार

राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उ०प्र० लखनऊ द्वारा सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ० विनयकुमार मालवीय** को उनकी कथाकृति 'श्रेष्ठ बाल कहानियाँ' के लिए जयशंकरप्रसाद पुरस्कार से गत दिवस पुरस्कृत किया गया।

उल्लेखनीय है कि डॉ० मालवीय एक लब्ध प्रतिष्ठ बाल साहित्यकार हैं। उनकी अब तक 11 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और वे सृजन सम्मान, सहारनपुर; लक्ष्मणप्रसाद अग्रवाल बाल साहित्य शिखर सम्मान, मुरादाबाद; रस भारती संस्थान, वृन्दावन; महेशचन्द्र गुप्त स्मृति सम्मान, हापुड़; शकुन्तला शिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार, इलाहाबाद; भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर; बाल साहित्य संस्कृति कला विकास संस्थान, बस्ती; नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया आदि विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित हो चुके हैं।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' को 'अक्षर आचार्य' सम्मान

'सहकार' पत्रिका के सम्पादक और अवधी, ब्रजी तथा खड़ी बोली हिन्दी के यशस्वी कवि-साहित्यकार **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'** को अक्षरधाम समिति, हरियाणा ने अपने प्रथम अक्षर सम्मान समारोह में 'अक्षर आचार्य' की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। आचार्य 'मधुरेश' ने विविध विधाओं में सृजन करके हिन्दी भाषा एवं साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

पिंजर के फ्रेंच अनुवाद को पुरस्कार

बहुचर्चित उपन्यास 'पिंजर' के फ्रेंच अनुवाद को फ्रांस के प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार से नवाजा गया है। पद्मविभूषण से सम्मानित सुश्री अमृता प्रीतम को पहले सप्ताह फ्रांस का (ला रट देस इंदेस लिटरेरी प्राइज) प्रदान किया गया। पुरस्कार में एक लाख 80 हजार रुपये की राशि शामिल है। 'पिंजर' का फ्रेंच अनुवाद सन् 2003 में डेनिस मैट्रिंग ने किया था। प्रसिद्ध पत्रकार खुशवंत सिंह ने 'पिंजर' का अंग्रेजी अनुवाद भी किया है। सुश्री प्रीतम के सहचर इमराज ने बताया कि पिछले सप्ताह पुरस्कार समिति के एक सदस्य ने श्रीमती प्रीतम के घर आकर यह पुरस्कार प्रदान किया। 'पिंजर' पर फिल्म भी बन चुकी है और उसे स्क्रीन अवार्ड तथा जी टेलीफिल्म अवार्ड भी मिल चुका है। सुश्री प्रीतम कुछ सालों से बीमार चल रही हैं और वह इन दिनों मीडिया से बातचीत करने की स्थिति में नहीं हैं।

स्मृति शेष

विनोदचन्द्र पाण्डे

बिहार तथा अरुणाचल के पूर्व राज्यपाल **विनोदचन्द्र पाण्डे** (अनुज : डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे) का 8 फरवरी 2005 को दिल्ली में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 77 वर्ष के थे। वे कवि और कहानीकार थे। विश्वविद्यालय प्रकाशन ने उनका कविता संग्रह 'बसंत और पतझर' और कहानी संग्रह 'स्वयंवर' प्रकाशित किया था। श्री पाण्डे अविवाहित थे।

पंजाबी कवि दीपक जट्टोई

पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि **दीपक जट्टोई** का 12 फरवरी 2005 को मोगा में निधन हो गया। वे काफी समय से बीमार थे। श्री जट्टोई के अनेक कविता संग्रह हैं। उन्हें पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने कवि शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित किया था।

बाल साहित्यकार

जयप्रकाश भारती और डॉ० शोभनाथ लाल का निधन

बाल साहित्यकार **जयप्रकाश भारती** का गत 5 फरवरी 2005 को उनके जन्मस्थान मेरठ शहर में निधन हो गया। उनकी किडनी और लीवर निष्क्रिय हो गए थे। भारती हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन से संबद्ध थे। हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन की लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' का उन्होंने 32 वर्ष तक सम्पादन किया। इस पत्रिका का बाल साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। बालवर्ग में सबसे अधिक पढ़ी जानेवाली यह पत्रिका है। बहुत बड़ा बाल साहित्यकार वर्ग इस पत्रिका से जुड़ा हुआ है। विज्ञानपरक बाल साहित्य सृजन के प्रति भारती का विशेष रुझान था। बाल साहित्य के माध्यम से वे बालकों को प्राचीन संस्कृति से जोड़े रहे। उन्होंने 'नंदन' के परीकथाओं तथा पुराणों की कहानियों पर आधारित कई विशेषांक प्रकाशित किए। सामंती मूल्य की कहानियों के भी वे पक्षधर थे। इससे 'नंदन' में आधुनिक बाल साहित्य की उपेक्षा भी हुई। भारती ने अनेक बाल साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया। मौलिक सृजन के अतिरिक्त उन्होंने बाल कविताओं, बाल कहानियों, बाल नाटकों और बाल साहित्य समीक्षा विषयक लेखों के संकलनों का भी सम्पादन किया। शिशुगीत और बाल कथाएँ भी लिखीं। उ०प्र० हिन्दी संस्थान ने इस वर्ष भारती को 'बाल साहित्य भारती' प्रतिष्ठा का पुरस्कार दिया। उनके निधन से बाल साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है।

बाल साहित्यकार **डॉ० शोभनाथलाल** का भी 22 जनवरी 2005 को निधन हो गया। वे बलिया से आकर वाराणसी में रहने लगे थे। बाल-कविताओं से उन्होंने बाल साहित्य समृद्ध किया था। बच्चों के लिए उन्होंने कहानियाँ भी लिखी थीं और बाल कहानियों के संकलन का सम्पादन भी किया था। बलिया में रहते हुए आपने 'नागरी बाल साहित्य संस्थान' की नींव डाली थी। यह संस्था बाल साहित्य की दिशा में निरन्तर कार्यशील हैं। डॉ० लाल को बाल साहित्य के लिए पुरस्कृत भी किया गया था। उनका बाल उपन्यास 'सीपिऐं डेला की सैर' काफी चर्चित हुआ था।

— डॉ० श्रीप्रसाद

आपका पत्र

आपका 7 फरवरी का पत्र मिला। पढ़कर मन गदगद हो उठा। कोई तो है कद्रदां हमारा भी।

महामहिम राष्ट्रपतिजी सचमुच बहुत सरल प्राणी, पर उतने ही अपने विषय के ज्ञाता हैं। मेरे पत्रों की जाँच-पड़ताल करवा कर लिखेंगे। हिन्दी में भी बात की। हिन्दी की कोई कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं। वहीं मेज पर सब चीजें सुव्यवस्थित ढंग से रखी थीं।

मुझसे नहीं, मेरे बेटे से उन्होंने यह भी कहा, यह तो (मैं) फोन करेंगे नहीं, तुम फोन करना, बताना कुछ मेडिकल एड की जरूरत हो तो मैं सब प्रबन्ध करवा दूँगा। **— विष्णु प्रभाकर,** दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' जनवरी अंक में प्रकाशित दोनों कविताएँ बहुत उत्तम हैं। पढ़कर आनन्द आया। 'टेलीविजन को देखो' तो करारा व्यंगय है। आपका उद्बोधन 'कितने हिन्दुस्तान' बहुत उत्तेजक, प्रेरक और सटीक है। प्रश्न उठता है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है? 1947 से पूर्व तो सभी प्रकार की कुत्साओं के लिए हम अंग्रेज़ों को दोष देते थे, विदेशी शासन को कोसते थे। आज़ादी मिले आधी शताब्दी से ऊपर समय होने आया। क्या किया हमारे नेताओं ने? किस दिशा में विकास किया? हर क्षेत्र में समस्याएँ, पग-पग पर विभाजन की खाइयाँ!!! बुद्धिजीवी हैं कि वे ख़ेमों में बँटे हैं, एक-दूसरे की टाँग खींचने के सिवा कुछ नहीं। पुरस्कार, अलंकरण, संसद-सदस्यता, राष्ट्रपति द्वारा भोज का निमंत्रण आदि चाहिए इन्हें। धर्मगुरुओं की दशा आप देख ही रहे हैं। देश का 75 प्रतिशत व्यक्ति भ्रष्ट हो गया है। विविध अनाचारों से दैनिक समाचार पत्रों के पन्ने भरे रहते हैं। दूरदर्शन भी नैतिक पतन के कुदर्शन होते रहते हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक पार्टी कुर्सी के लिए लालायित है, तब देश की चिन्ता किसे?

पुरस्कारों और सम्मानों में दूकानदारी चल पड़ी है। संस्थाएँ सहयोग राशि माँगती हैं और सम्मानित करती हैं। मियाँ की जूती मिया के सिर। साहित्य के क्षेत्र में भी राजनीतिक गुण्डागर्दी प्रवेश कर गई है। फिर भी 'हमारा देश महान' तो है ही।

— विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक', गाजियाबाद

'भारतीय वाङ्मय' में आपका सम्पादकीय गणेशशंकर विद्यार्थी की याद दिलाता है। आपकी सोच निरन्तर राष्ट्रवाद के सुनहले चादर से झाँकती दिखायी पड़ती है। अपनी भाषा, अपनी ज़ुबान का क्या महत्त्व है—यह आपकी सारगर्भित टिप्पणियों से ज्ञात होता है। प्रेमचंद और 'प्रसाद' का परिचयात्मक सम्मिश्रण राधा और कृष्ण के सम्मिलन से कम मोहक और रुचिकर नहीं प्रतीत होता है। लगता है उद्धरण नहीं दोनों महान साहित्यकार प्रत्यक्ष वार्तालाप कर रहे हैं।

— डॉ० उदयप्रताप सिंह, सारनाथ

'भारतीय वाङ्मय' जनवरी 2005 के अंक में 'टेलीविजन को देखो' व्यंग्यात्मक कविता काफी पसन्द आयी। विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी देने वाली वास्तव में यह एक साहित्यिक समाचार पत्रिका है। **— डॉ० हरेराम पाठक,** डिगबोई तिनसुकिया (आसाम)

'भारतीय वाङ्मय' के प्रत्येक अंक के सम्पादकीय में किसी न किसी समस्या को लेकर सार्थक एवं सशक्त विचारों को प्रकट करने का प्रयास रहता है। यह प्रवाह अबाध गति से चलता रहे, यही अपेक्षा है। **— गोपाल गोलवलकर,** ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' के द्वारा आप सराहनीय कार्य कर रहे हैं इसके लिए बधाई। इससे हिन्दी एवं अहिन्दी जगत में क्या कुछ हो रहा है, पता चल जाता है और हम नवीनतम जानकारी से सम्पन्न।

— साधना अग्रवाल, दिल्ली

जब 'भारतीय वाङ्मय' आता है तो हठात् सबसे पहले उसी पर उँगलियाँ टिकती हैं। ज्ञात रहता है कि उसमें कुछ विशेष बात अवश्य होगी। साहित्य-कला-संस्कृति से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ इसी से प्राप्त होती हैं। **— (डॉ०) अर्जुनदास केसरी,** सोनभद्र

जनवरी 2005 के 'भारतीय वाङ्मय' में पृष्ठ एक-दो पर छपी ज्ञानेन्द्रपति की कविता 'टेलीविजन को देखो' ने मन मोह लिया। यथार्थ का बड़ा सुन्दर और सटीक विवेचन है। किताबों की पीड़ा जैसे स्वयं मुखर हो रही है। 'किताबों के पास जाओ' में जय चक्रवर्ती भी कम नहीं हैं। 'कितने हिन्दुस्तान' में आपने देश की दुखती रग पर उँगली रखी है। स्वयंभू नेता पता नहीं, देश को कहाँ ले जाकर छोड़ेंगे? शायद यह नहीं जानते या शायद जान-बूझकर भी अपने स्वार्थ में ऐसे बन रहे हैं और स्वयं अमर होने के चक्कर में देश की उम्र कम कर रहे हैं। **— डॉ० हरीशकुमार शर्मा** पासीघाट (अरुणाचल)

'भारतीय वाङ्मय' हिन्दी जगत की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है। क्षीणकाय होते हुए भी पत्रिका समसामयिक घटनाक्रम, पुस्तक समीक्षा, प्रकाशन समाचार, सम्मान-गोष्ठियों आदि की सूचनाएँ देकर हमारा ज्ञानवर्द्धन करती है। हर बार की भाँति इस अंक का प्रेरणाप्रद सम्पादकीय एक गम्भीर समस्या की ओर संकेत करता है—यह दुर्भाग्य है कि हमारे नेतागण विघटन को और हवा देते हैं ताकि उनकी स्वर्गिक 'सत्ता' सुरक्षित रहे।

— डॉ० वीरेन्द्रकुमार सिंह
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लि०
सुनाबेड़ा-763002 (उड़ीसा)

'भारतीय वाङ्मय' जनवरी 2005 का सम्पादकीय बड़ा प्रभावकारी है। पाठक को बहुत सोचने के लिए आपने मजबूर किया है। इसमें आपकी प्रामाणिकता सराहनीय है। इस छोटी-सी पत्रिका में आप काफी सामग्री दे रहे हैं।

— डॉ० टी०आर० भट, धारवाड़

यत्र-तत्र-सर्वत्र

रामदरश मिश्र की पुस्तक पर चर्चा-गोष्ठी

राजधानी स्थित रूसी विज्ञान एवं संस्कृति केन्द्र और परिचय साहित्य परिषद के संयुक्त तत्वावधान में रूसी विज्ञान एवं संस्कृति केन्द्र में प्रख्यात साहित्यकार डॉ० रामदरश मिश्र के कविता संग्रह 'आम के पत्ते' पर चर्चा गोष्ठी आयोजित की गई। चर्चा से पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सुप्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह ने कविता संग्रह 'आम के पत्ते' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर डॉ० सूर्यदीन यादव की पुस्तक 'रामदरश मिश्र की कविता : सृजन के रंग' का मुख्य अतिथि मैनेजर पाण्डे ने लोकार्पण किया। केदारनाथ सिंह ने रामदरश मिश्र की कविताओं में व्याप्त गहरी संवेदनशीलता की ओर इशारा करते हुए उसे ग्राम्य जीवन की उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि मिश्रजी की कविता साहित्य की लम्बी साधना का प्रतिफल है, जिसमें गहरी कलात्मकता और अनुशासन में बँधी भावुकता भी शामिल है। ग्लोबलाइज़ेशन के आधुनिक सन्दर्भों की कविता 'विश्वग्राम' की व्यंग्यात्मक शैली की सराहना करते हुए उन्होंने श्रोताओं को वस्तुस्थिति की वास्तविकता से जोड़ा। सुप्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पाण्डे ने मिश्रजी की कविताओं को जनसाधारण की कविता की संज्ञा दी और कहा कि घर में रोज इस्तेमाल होने वाली कई मामूली वस्तुओं पर कविता कर मिश्रजी ने हमें अपना ही खोया हुआ घर वापस दिलाया है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि साधारण चीज़ों पर रचना करना एक असाधारण बात है और मिश्रजी ऐसे असाधारण रचनाकार हैं। युवा कवयित्री-कथाकार अलका सिन्हा ने मिश्रजी की कविताओं में आई संवादात्मक शैली को रेखांकित करते हुए कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए और कहा कि ये कविताएँ हमारी खोती जा रही संस्कृति के प्रति आज की पीढ़ी को सचेत करने का प्रयास है। युवा आलोचक ज्योतिष जोशी ने इन कविताओं को मनुष्यता से गहरे जुड़ा हुआ बताया, साथ ही सत्ता का प्रतिरोध करती कुछ कविताओं का उल्लेख भी किया जबकि सुपरिचित कवि राधेश्याम तिवारी ने इन कविताओं को ग्रामीण जीवन की जड़ों से जुड़ा हुआ बताया और कहा कि इतने वर्षों तक महानगर में रहते हुए भी उस गाँव को सहेज पाना मिश्रजी की विशेषता है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ० राहुल ने मिश्रजी की कविताओं में मानवीकरण के पक्ष पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का कुशल संचालन गीतकार ओम निश्चल ने किया।

सूर्यबाला को साहित्यश्री सम्मान

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश लेखिका मंच की वार्षिक पत्रिका 'अन्त:निनाद' का लोकार्पण आगरा में प्रख्यात कथाकार सूर्यबाला एवं मण्डलायुक्त श्री अशोककुमार के हाथों सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सूर्यबालाजी को 'साहित्यश्री' सम्मान से सम्मानित किया और प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

इस अवसर पर महिला लेखन की 'चुनौतियों खतरों तथा सामाजिक दायित्व' पर परिचर्चा की गयी। सूर्यबाला ने लेखिका मंच को बधाई देते हुए कहा ''वह आगरा जैसे इतिहास के शहर में वर्तमान चुनौतियों की मशाल जलाकर आगे बढ़ने के लिए कृतसंकल्प हैं। महिला लेखन को और विवेकशील और परिपक्व होना है। नारी-विमर्श को और गहरे तथा व्यापक सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। मात्र विद्रोह से जीवन में सन्तुलन नहीं स्थापित किया जा सकता। विद्रोह कहाँ और कैसे किया जाये यह स्त्री अपने विवेक से तय करें।''

प्रतिष्ठित लेखिकाओं, डॉ० विभा देवसरे, इन्दिरा रॉय तथा प्रीति श्रीवास्तव को भी सम्मानित किया गया। संस्थापिका प्रतिमा अस्थाना तथा अध्यक्ष शशि मल्होत्रा ने अभ्यागतों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन रेखा पातसरिया तथा आभार प्रदर्शन फरहत बानो ने किया। समारोह में लेखिका उषा यादव, कवि सुशील सरित, मधु वशिष्ठ, भारती पारिजात, चन्द्रप्रभा मेहता, सुषमा सिंह, सुधा बंसल, डॉ० प्रभा सिंह, डॉ० हेमा पाठक, सुशील राठौर, प्रेमलता सिंह, सुधा सक्सेना स्वाति माधुर आदि उपस्थित थे।

कैफ़ी आजमी अकादमी भवन

कैफ़ी आजमी की याद में रविवार, 13 फरवरी 2005 को लखनऊ में कैफ़ी आजमी अकादमी भवन निर्माण की शुरुआत लखनऊ के महापौर डॉ० सतीशचन्द्र राय ने की। लखनऊ के पेपर मिल कालोनी में चार हजार वर्ग मीटर पर बन रहे इस भवन का शिलान्यास 27 फरवरी 2004 को मुलायम सिंह ने किया था। अकादमी के सचिव सैयद सईद मेहदी के अनुसार इस भवन में 350 सीटों का एक प्रेक्षागृह, पुस्तकालय, म्यूज़ियम और कान्फ्रेन्स हॉल बनेगा।

सुभद्राकुमारी चौहान जन्मशती समारोह

सृजन महिला समिति अम्बिकापुर ने तीन चरणों में सुभद्राकुमारी चौहान जन्मशती समारोह का आयोजन किया। समारोह में सुभद्राजी के जीवन, उनकी कविताओं और उनकी कहानियों पर सरगुजा के विभिन्न साहित्यकारों और वक्ताओं ने चर्चा की। उनकी कहानियों की नाट्य प्रस्तुति भी की गयी। समारोह में मुख्य रूप से साहित्यकार वेदप्रकाश अग्रवाल, लता मिश्रा, प्रमिला पाण्डेय, संगीता मिश्र, आशा शर्मा, आशुतोष तिवारी, विजय गुप्त, निशा श्रीवास्तव तथा अनेक साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

सुभद्राकुमारी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

28 दिसम्बर 2004 को उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन आ०प्र० उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री देवेन्द्र गुप्ता ने किया। स्वतन्त्र वार्ता दैनिक के सम्पादक डॉ० राधेश्याम शुक्ल ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम के विविध सत्रों में सुभद्राजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विविध विद्वानों ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये। डॉ० एम० वेंकटेश्वर, डॉ० मणिक्यांबा, डॉ० रमेश जाघव, डॉ० धर्मपाल पहिल आदि ने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

श्री विनोदकुमार अग्रवाल, आई०ए०एस० समापन सत्र के मुख्य अतिथि रहे। प्रो० नूरजहाँ बेगम, हैदराबाद विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की अध्यक्षता ने समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

देशभक्त, समर्पिता कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान पर दक्षिण भारत में आयोजित होनेवाली यह प्रथम संगोष्ठी है।

सुभद्रा-साहित्य-समारोह

सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था साहित्यानुशीलन समिति ने 26 जनवरी 2005 को सुभद्राकुमारी चौहान की जन्मशताब्दी का द्वितीय समारोह आयोजित की गई। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने हिन्दी साहित्यकारों एवं छात्रा-छात्रों का स्वागत करते हुए जन्मशती के सन्दर्भ में आयोजित कार्यक्रमों की सामयिकता एवं महत्ता पर प्रकाश डाला। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रचारक महाविद्यालय के छात्रों, श्री एस० गौस बाशा और नागराजू ने सुभद्राजी की कविताओं का पाठ किया। मद्रास क्रिश्चियन कालेज के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यम की अध्यक्षा में संचालित अनुशीलन-गोष्ठी में सर्वश्री रुक्माजीराव अमर, डॉ० दुलालचंद्र शास्त्री, डॉ० एम०एस० जयराम और डॉ० ए०वी० शिवकुमारी ने सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य-कथा साहित्य पर अनुशीलन-प्रपत्र प्रस्तुत किये दूसरे सत्र में काव्य-गोष्ठी का संचालन किया। वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार श्री रुक्माजी अमर ने, जिसमें नगर के प्रसिद्ध कवियों, रमेश गुप्त नीरद, श्री ईश्वर करुण, श्री संजय जोशी, श्री प्रह्लाद श्रीमाली, श्री वासुदेवन शेष आदि ने अपने काव्य-सुमन समर्पित किये। समिति के सहसचिव श्री वासुदेवन ने अपने धन्यवाद भाषण में जन्मशताब्दी के सन्दर्भ में प्रकाश्य 'सुभद्रा-स्मारिका' के लिए नगर के लेखक बन्धुओं के सहयोग की कामना व्यक्त की। समारोह में आचार्य नन्दकिशोर (जबलपुर), डॉ० एन० सुन्दरम, डॉ० इन्द्रकुमार शर्मा, श्री गणपतलाल ओझा आदि अनेक साहित्य-सेवी समुपस्थित थे।

जापानी विश्वविद्यालयों में हिन्दी और उर्दू

''हमारे यहाँ बहुत से ऐसे शब्द हैं जो संस्कृत या पालि से लिये गये हैं। जापान का रूस पर फतेह हासिल कर लेना एक महत्त्वपूर्ण बात थी। हमारे यहाँ हिन्दी और उर्दू दोनों की शिक्षा जारी है। जापान में दो विश्वविद्यालय हैं जहाँ हिन्दी-उर्दू की पढ़ाई के लिए हर वर्ष 20-20 दाखिले होते हैं। यद्यपि वहाँ पी-एच०डी० करने वाले नहीं होते, लेकिन अगर आ जाएँ तो खुशी की बात होगी। ये विद्यार्थी हिन्दी फिल्मों को देखने के लिए या डिग्री लेने के लिए पढ़ते हैं।'' ये उद्गार जापानी विश्वविद्यालय के प्रो० सो यामाने के साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित जापानी विश्वविद्यालयों में हिन्दी-उर्दू शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक गतिविधियाँ

विषयक परिचर्चा में व्यक्त किये। प्रो० ताकामित्सु मत्सुमुरा ने बताया कि जापानी साहित्य का उर्दू में अनुवाद किया जा चुका है। उर्दू केवल जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर बोली जाने वाली जुबां नहीं है। यह दुनिया के कोने-कोने में बोली जानी वाली जुबां है। जापान के टोक्यो और ओसाको विश्वविद्यालय में हिन्दी-उर्दू पढ़ाई जाती है। पढ़नेवाले विद्यार्थियों में लड़कियों की संख्या ज़्यादा होती है। पहले साल में प्राथमिक शिक्षा दी जाती है जिसमें ग्रामर भी शामिल है। उनसे गुफ्तगू भी की जाती है। प्रेमचंद, मंटो, कृश्न चन्दर आदि की रचनाओं का अनुवाद हो चुका है। इसी परिचर्चा में प्रो० तबस्सुम कश्मीरी ने कई महत्त्वपूर्ण बातें बताई—जापान में 1910 ई० में हिन्दुस्तान के स्वतंत्रता सेनानी भोपाल के बरकतुल्ला साहब आये थे। उन्हीं के हाथ से जापान में उर्दू की नींव पड़ी। 1960 ई० के बाद स्थिति में बदलाव आया। 1970 के बाद एशिया के अदब के तर्जुमे करवाये गये। हिन्दी और उर्दू के काफी मात्रा में अनुवाद हुए हैं। फिक्शन का अनुवाद ज्यादा हुआ शायरी का कम हुआ। इसका कारण शायद यह है कि फिक्शन को ज्यादा पसन्द किया जाता है जबकि शायरी से लोग इतनी नजदीकी महसूस नहीं करते। टोक्यो में साल में एक बार मुशायरा होता है। इस साल से बहस-बाजी का सिलसिला शुरू हुआ जो ड्रामे के रूप में है। वहाँ की लाइब्रेरी में बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी-उर्दू की किताबें उपलब्ध हैं।

इस परिचर्चा में जापान से आये विद्वानों का स्वागत करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष प्रो० गोपीचंद नारंग ने कहा कि ''जब हम अपने मुल्क से दूर रहते हैं तो अपनी संस्कृति, भाषा और देश के प्रति हमें ज्यादा लगाव होता है, जिसको अपने कार्य से सामने लाते हैं। हमारे यहाँ हिन्दी-उर्दू को वो समान प्राप्त नहीं है जो वहाँ है। यहाँ उर्दू-हिन्दी पढ़नेवाले विद्यार्थी उँगलियों पर गिने जाते हैं जबकि जापान में 80-80 विद्यार्थी आ रहे हैं यह बड़ी बात है।''

—साधना अग्रवाल

आलोचना और आज का समाज

पटना में साहित्यकारों की संगोष्ठी में डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि समालोचना के केन्द्र में सहृदय समाज होना चाहिए। समालोचक को यह देखना चाहिए कि कृति में समाज के लिए क्या टिप्पणी है। भामह, दण्डी से लेकर आचार्य मम्मट के काव्यादर्श की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पुरानी कृतियों का बार-बार मूल्यांकन होना चाहिए। पुरानी कृतियों में सहृदय समाज को साथ लेकर चलने की समृद्ध परम्परा रही है। अपने समय के साहित्य को देखना, उसकी समीक्षा करना आलोचना का मुख्य कर्म है। आलोचक का बहुत बड़ा दायित्व है नयी प्रतिभा की अच्छी कृतियों को ढूँढ़ निकालना और उस पुस्तक की विशेषता को उद्धृत करना, उस अनजान लेखक को पहचान देना।

पत्रकार अपने धर्म से अलग

बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ, पटना के सभागार में 7 फरवरी को 'आलोचना और आज का समाज' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता डॉ० नामवर सिंह ने उपस्थित श्रोताओं से विषयसम्बन्धी संवाद की इच्छा व्यक्त की। इस पर 'आज' प्रतिनिधि ने प्रश्न किया कि आप वर्तमान पत्रकारिता में देश, काल और परिस्थिति को किस रूप में देख रहे हैं?

नामवर सिंह ने कहा कि पत्रकार इतने बदल गये हैं कि वे अपने धर्म से अलग हो गये हैं। रिपोर्टर और रिपोर्टिंग ही रह गयी है, जैसा पच्चीस वर्ष पहले था। पुनः यह पूछने पर कि उन दिनों की पत्रकारिता का बीज देश में कहाँ बचा हुआ है और किस रूप में इसका मूल्यांकन कौन करेगा? नामवर सिंह ने कहा कि इसका जवाब पत्रकार को ही देना होगा।

बद्री विशाल पित्ती ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित

'कल्पना' का काशी अंक

हैदराबाद से प्रकाशित होने वाली सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'कल्पना' का काशी अंक प्रकाशनाधीन है। इसका सम्पादन कवि-समीक्षक प्रयाग शुक्ल कर रहे हैं। 'कल्पना' के संचालक-सम्पादक स्व० बदरीविशाल पित्ती ने इस अंक की कुछ योजना अपने जीवनकाल में ही बनायी थी, पर, वह इसे अन्तिम रूप नहीं दे सके थे। उनके सुपुत्र शरद पित्ती ने उनकी इच्छा को ध्यान में रखते हुए 'कल्पना' के काशी अंक को बदरी विशाल पित्ती ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित करने का संकल्प किया है। 'कल्पना' तो अब बन्द हो चुकी है, इसलिए इसका प्रकाशन डिमाई आकार के लगभग 400 पृष्ठों में पुस्तक रूप में किया जा रहा है। इसका लोकार्पण दिल्ली में 28 मार्च 2005 को सम्पन्न होगा और भविष्य में इसे लेकर वाराणसी में एक आयोजन प्रस्तावित है। इस पुस्तक में 'कल्पना' के अनुरूप कविताएँ, कहानियाँ, लेख और आलोचना लेख तो होंगे, संस्मरण और वृत्तांत भी रहेंगे। काशी और कला, काशी और संगीत, काशी और फिल्म, काशी और रंगमंच पर भी सामग्री होगी।

फाग़ के गायक रंगपाल

20 फरवरी 1864 को जन्मे हरिहरपुर, बस्ती में 'फाग' (होलीगीत) के गायक **रंगपाल** की जयन्ती 20 फरवरी 2005 को मनायी गयी। ग्रामीण पृष्ठभूमि किन्तु सम्पन्न रंगपाल ने अपने माता-पिता से साहित्यिक विरासत प्राप्त की। राम और कृष्ण को अपने 'फाग' तथा होली के अन्य गायन में माधुर्य के साथ अभिव्यक्त किया है। इनके 'फाग' गीत 1892 में 'तरंगिनी' पत्रिका और 'रंग उमंग' पुस्तक में प्रकाशित हुए। पूर्वी उत्तर प्रदेश से मारीशस, बैंकाक और सूरीनाम में गये प्रवासी ये गीत अपने साथ ले गये, जो आज भी उनका मनोरंजन कर रहे हैं। इनके गीतों के संग्रह 'गीत सुनिधि', 'शान्त रसायन', 'गीत सुधावर्षिणी', 'पपीहा पचीसी' नाम से प्रकाशित हुए। उनके जन्मस्थान हरिहरपुर में 20 फरवरी 1994 को उनकी मूर्ति स्थापित की गयी थी। पिछले दिनों क्षेत्र के साहित्यप्रेमियों ने माँग की है कि उनकी पुस्तकें पुनः प्रकाशित कर पुस्तकालयों को सुलभ करायी जाँय।

आज देश में राजनीति का दुष्चक्र देश की साहित्य, संस्कृति, इतिहास और कला को प्रभावित कर रहा है। सत्ता बदलती है सारी मान्यताएँ बदल दी जाती हैं। सत्ता की दृष्टि सापेक्ष हो जाती है। सत्ता सदा अपनी राजनीतिक विचारधारा और अपने लोगों तक सीमित रह जाती है, जिससे देश की शाश्वत बौद्धिक अवधारणा प्रभावित होती है। इससे क्षुब्ध साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों ने इस पत्र में अपना क्षोभ व्यक्त किया है—

और अब प्रतिबद्ध बौद्धिकता

सम्पादकजी,

लगता है वर्तमान राजनीति, राजधर्म और प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के मूल स्तम्भों को तहस-नहस करके छोड़ेगी। किसी समय राज्य की स्टील-फ्रेम कही जाने वाली प्रशासनिक प्रणाली को तो उन्होंने प्रतिबद्धता का पाठ पढ़ाते-पढ़ाते और अप्रतिबद्धों को निपटा-निपटा कर प्रतिबद्ध बना ही लिया है और इसी का दुष्परिणाम है कि आजकल आधी रात के समय एक बूढ़े पूर्व मुख्यमंत्री को घर से घसीटकर गिरफ्तार किया जाता है, मन्त्रीगण थाने में बैठकर पुलिस को निर्देशित करते हैं किसको गिरफ्तार किया जाय तथा किसको छोड़ा जाय और पुलिस महानिरीक्षक तथा जिला मजिस्ट्रेट यह सब करने देते हैं, जेल में बन्द अपराधी मोबाइल से मुख्यमंत्री और पुलिस महानिरीक्षक से बात करता है और सारा प्रशासन तन्त्र देखता रहता है तथा एक कुख्यात तस्कर से अभिनेता को छुड़ाने के लिए मुख्यमंत्री के कहने पर डी०जी० पुलिस बीस करोड़ की फिरौती देता है। फिर दोष देते हैं न्यायपालिका की सक्रियता को। जब प्रशासन तन्त्र की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी गई हो, उसके घुटने सदा के लिये मोड़ दिये गये हों, तो प्रजा के कष्ट की फिर कोई तो सुनेगा। हम सोचते हैं राजनेता—निरपेक्ष सक्रिय न्यायपालिका ही आज की आशा हैं। किन्तु अब इस बढ़ती हुई विकृति में एक और आयाम जुड़ गया है—बौद्धिक वर्ग भी प्रतिबद्ध हो। प्रतिबद्ध साहित्यकारों के तो खेमे हो ही गये हैं और विभिन्न पुरस्कारों के रेशमी जाल में उनको फँसा दिया गया है—विद्वान् मनीषी, इतिहासविद् तथा वैज्ञानिकों की भी अब बारी है। जिस तरह से भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के तपःपूत विद्वान् को हटाया गया जिससे संस्था गौरवान्वित थी, वह सचमुच एक घोर संकेत है। माना कि शासन को अपनी संस्थाओं के प्रमुखों को चुनने का अधिकार है तथा किन्हीं विद्वान् की विचारधारा उनको असुविधाजनक भी लग सकती है किन्तु शासन उनकी विद्वत्ता तथा वरिष्ठता, देश तथा विश्व में उनकी प्रतिष्ठा का ख्याल रखते हुए उन्हें सम्मानपूर्वक विदा तो कर ही सकता है। इन मनीषियों के क्रियाकलाप ऐसे तो नहीं होते कि कुछ महीने उनके पद पर बने रहने से सरकार पर आफत आ जायगी। फिर उनका कार्यकाल पूरा होने पर उन्हें ससम्मान विदा क्यों नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के कदम राजा की इसी मंशा के द्योतक हैं कि प्रतिबद्ध रहो अन्यथा दरवाजा नापो। वाल्मीकि रामायण

में श्रीराम ने भरत से कुशल प्रश्न के ब्याज से राजनीति का उपदेश किया है। ये सिद्धान्त शाश्वत हैं और प्रत्येक राज व्यवस्था में प्रासंगिक। उन्होंने कहा है—

कच्चित् विनयसम्पन्नः कुलपुत्रो बहुश्रुतः
अनसूयुरनुद्रष्टा सत्कृतस्ते पुरोहितः
(वा०रा० 2/100/11)

हे भरत! क्या तुम विनयसम्पन्न, कुलीन, अत्यन्त विद्वान्, दूसरे के दोषों को न देखने वाले, नीति धर्म का मार्ग जानने वाले पुरोहित का सम्मान तो करते हो न? क्योंकि ऐसा पण्डित (विद्वान्, वैज्ञानिक, मनीषी—बौद्धिक) राज्य के संकट के समय बहुत उपकारी होता है। (पण्डितों हयर्थ कृच्छ्रेषु कुर्यान्निश्रेयसं महत्) आचार्य गोविन्दचन्द्र पाण्डे ऐसे ही विश्वविश्रुत मनीषी विद्वान् हैं। उनका इस प्रकार हटाया जाना आज की कुत्सित राजनीति में प्रतिभा का शवदाह है। प्रतिभा का यह असम्मान किसी भी राज्य के लिये अशुभ संकेत है।

श्रीराम ने भरत को यह चेताया भी कि कहीं तुम अनात्मवादी लोकायतिक ब्राह्मणों पर निर्भर तो नहीं हो क्योंकि ये अनर्थ में ही कुशल हैं, अल्पज्ञ हैं, किन्तु अपने आपको पण्डित मानते हैं तथा निरर्थक प्रवाद करते हैं—

कच्चिन लोकायतिकान् ब्राह्मणांस्तात सेवसे
अनर्थकुशला ह्येते बालाः पण्डितमानिनः
(वा०रा० 2/100/38)

आज शासन इन्हीं लोकायतिकों (वाममार्गियों) के कब्जे में है। इस विषम परिस्थिति में उज्जयिनी के निवासी तो महाप्रभु वल्लभाचार्य के स्वर में स्वर मिलाते हुए देश से यही कह सकते हैं कि' कृष्ण एव गतिस्तव'

डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, उज्जैन; डॉ० मोहन गुप्त, उज्जैन; श्री गोविन्द मिश्र, भोपाल; सुरेशचन्द्र पाण्डे, इलाहाबाद; जयशंकर त्रिपाठी, इलाहाबाद; रमेशचन्द्र शाह, भोपाल; ध्रुव शुक्ल, भोपाल

राजस्थानी बनाम मारवाड़ी

कांग्रेस के शासनकाल में राजस्थान विधानसभा ने अगस्त 2003 के अन्तिम दिन बिना बहस के राजस्थानी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया। कतिपय बुद्धिजीवियों और भाषाविदों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। राजस्थानी भाषा संकल्प विरोधी समिति का कहना है कि राजस्थान के नाम पर पश्चिमी राजस्थान की मारवाड़ी को राजस्थानी की मान्यता दिलाने का प्रयास हो रहा है। राजस्थानी को मान्यता देने से ब्रज, मालवी, ढूँढारी, मेवाड़ी, हाड़ोती, वागड़ी और शेखावाटी बोलने वालों को असंतोष होगा, इससे विघटन होगा।

दूसरी ओर राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति राजस्थानी के समर्थन में संघर्ष कर रही है। राजस्थानी साहित्यकार लक्ष्मीकुमारी चूड़ावाल और कल्याण सिंह शेखावत के अनुसार राजस्थानी स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषा है, इसका सुसम्बद्ध व्याकरण और शब्द-भण्डार है। यह कहना सही नहीं है कि एक भाषा विशेष को मान्यता देने से वह अन्य भाषा पर प्रभावी हो जायगी।

लोगों का कहना है कि हिन्दी को ही राजस्थान की मुख्य भाषा की मान्यता मिलनी चाहिए।

राजस्थानी शौर्य, समर्पण और प्रेम की भाषा है, राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों की भाषा में भिन्नता हो सकती है किन्तु राजस्थानी जिसे पूरे देश में मारवाड़ी के नाम से जाना जाता है उसे मान्यता मिलनी चाहिए। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है, राजभाषा है उससे किसी प्रकार के विवाद की अपेक्षा नहीं है।

हिन्दी में शोध अर्थात् ज्ञान संस्कृति

हिन्दी में शोध अर्थात् ज्ञान संस्कृति हिन्दी के ख्यातनामा साहित्यकार श्री सुधीश पचौरी ने हिन्दी में शोध विषय तलाशते शोधकर्ताओं और उनके गाइडों के लिए शोध के नये विषय सुझाये हैं जो हिन्दी में शोध की दशा और दिशा पर गहरा व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं—

1. शोध ग्रन्थों का उद्भव और विकास, 2. हिन्दी में योग्य विषयों के चयन निर्माण और निर्वाह की प्रक्रिया, 3. पी-एच०डी० उपाधि हेतु मौखिकी और काफी-किराए की भूमिका, 4. हिन्दी में पी-एच०डी० एवं डी०लिट्० का तुलनात्मक अध्ययन, 5. हिन्दी में शोध इण्डस्ट्री का उद्भव और विकास आदि। आज हिन्दी में शोध ने इण्डस्ट्री का स्वरूप धारण कर लिया है जिसमें कितने कार्यरत और कितने अवकाशप्राप्त प्रोफेसर इस उद्योग में लगे हैं। यह ऐसा उद्योग है इसमें दुहरी कमाई है—शोधग्रन्थ उत्पादन में और परीक्षक के रूप में स्वपरीक्षण में। बलिहारी गुरु आपणो काको लागूँ पाँव।

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय नाट्य संस्थान को मान्य विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनवर्सिटी) की मान्यता के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। भाषायी रंगकर्मियों का आग्रह है कि देश की विभिन्न भाषाओं के नाट्य संस्थानों को दिल्ली केन्द्रित छवि से मुक्त कर राष्ट्रीय नाट्यशाला (नेशनल थियेटर) के रूप में विकसित किया जाय।

छत्तीसगढ़ के निजी विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ में पिछले दिनों प्राइवेट सेक्टर यूनिवर्सिटी एक्ट 2002 के अन्तर्गत कुकुरमुत्ते की तरह उगे मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों की मान्यता सुप्रीम कोर्ट ने निरस्त कर दी। देश के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने इन विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया था। वे अब हताशा में दौड़ भाग कर रहे हैं। उनके समय और धन के अपव्यय के साथ उनका भविष्य भी प्रभावित हो रहा है। शिक्षा के व्यावसायिक राजनीतिकरण का यह परिणाम है कि छत्तीसगढ़ की पूर्व सरकार ने इस प्रकार थोक भाव में निजी विश्वविद्यालयों को मान्यता प्रदान की जो किसी भी दृष्टि से सक्षम नहीं है। रोजगारपरक शिक्षा की तलाश में आज कितने युवक ठगे जा रहे हैं। शासन को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

विदेश मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति पुनर्गठित

विदेश मंत्री नटवर सिंह की अध्यक्षता में विदेश मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया गया है। विदेश राज्यमंत्री राव इन्द्रजीत सिंह समिति के उपाध्यक्ष होंगे। समिति के अन्य सदस्यों में संसद सदस्य वेदप्रकाश गोयल, कमला मनहर, नवीन जिन्दल, उदय सिंह (सभी राज्यसभा), सर्वराज सिंह, लक्ष्मीनारायण पांडे (लोकसभा) शामिल हैं। समिति के गैर सरकारी सदस्यों में कमलेश्वर, हिमांशु जोशी, रत्नाकर पांडे, वेदप्रताप वैदिक, एजे अब्राहम, श्रीमती के शास्त्री, संजय एम० ददलिया, पद्माकर पांडे और भीष्मकुमार शामिल हैं।

'धर्मशुद्धि' ग्रन्थ का विमोचन एवम् विद्वत्सत्कार

आर्यमर्यादापीठ, वाराणसी से प्रकाशित, पीठ के आचार्य पं० कमलाकान्त त्रिपाठी के द्वारा रचित 'धर्मशुद्धि' ग्रन्थ का विमोचन कर्णघण्टा में स्वामी कौशलेन्द्रप्रपन्नाचार्यजी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस विमोचन की अपूर्वता इस बात में थी कि काशी के मूर्धन्य शताधिक विद्वानों का भव्य सम्मान धर्मविषयक गोष्ठी में किया गया। पीठ की ओर से महाराजश्री को अभिनन्दन-पत्र एवं अङ्गवस्त्र काशी विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं० रामयत्न शुक्ल, पं०प्र० वशिष्ठ त्रिपाठी, डॉ० कमलाकान्त त्रिपाठी, प्रो० रामकिशोर त्रिपाठी एवं हरिप्रसाद द्विवेदी के द्वारा प्रदत्त हुआ। अभिनन्दन का वाचन डॉ० हरिप्रसाद द्विवेदी ने किया।

कथन

सूचना और ज्ञान

सूचना और ज्ञान एक नहीं होते। सूचना हमेशा सूचित होती है। वह किसी दूसरे का उधार अनुभव होती है। ज्ञान अपना अनुभव होता है। ज्ञान का अनुभव बेशक सूचित हो सकता है, पर दूसरे के लिए वह ज्ञान नहीं हो सकता। उसके लिए वह सिर्फ सूचना ही होगा। सूचना तटस्थ होती है। ज्ञान लोकमंगल का पैरोकार होता है। सूचना के लिए भाषा चाहिए। कोड चाहिए। कम्प्यूटर और इंटरनेट चाहिए। ज्ञान के लिए अनुभूति चाहिए। गुरु चाहिए। वास्तविक गुरु सूचित नहीं करता। गुरु अनुभव के लिए प्रेरित करता है। अनुभव हस्तांतरणीय नहीं होता। इसलिए वह सूचना नहीं होता। सारा सूचना संसार है और सारे विज्ञान अविद्या हैं। ये प्रिय के प्रति राग देते हैं। द्वेष देते हैं। कलुष और युद्ध देते हैं। विद्या श्रेय देती है, सत्य देती है, आनन्द देती है। मनुष्य-मनुष्य के बीच अभेद बताती है, संस्कृति देती है, आशा देती है। मुक्त करती है—सा विद्या या विमुक्तये।

—हृदयनारायण दीक्षित

''भूमण्डलीकरण के नाम पर हमारे घरों, घाटों तथा संस्कृतियों पर प्रहार हो रहा है। भूमण्डलीकरण पूतना का प्रतीक है जो हमारी अस्मिता को खत्म करना चाहती है। कला एवं मनोरंजन में बढ़ती अश्लीलता भी भूमण्डलीकरण की देन है, इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी जिम्मेदार है।''लगता है काशीनाथ सिंह भी भूमण्डलीकरण से प्रभावित हैं।'काशी का अस्सी' इस प्रभाव से मुक्त नहीं है। **—काशीनाथसिंह**

पुस्तक समीक्षा

धन-धन मातु गङ्ग
डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-376-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 250.00

गंगा महिमा का भगीरथ प्रयास
हर्षवर्धन राय

काशी की विश्व प्रसिद्ध संस्कृति को गंगा की संस्कृति कहा जाय तो गलत नहीं होगा। गंगा व काशी का सम्बन्ध वस्तुत: माता-पुत्र का है। डॉ० भानुशंकर मेहता द्वारा रचित नव प्रकाशित पुस्तक 'धन-धन मातु गङ्ग' इसका ताजगी भरा प्रमाण है। पुस्तक सम्बन्धों की इसी आत्मीयता को सघन अभिव्यक्ति प्रदान करती है। लेखक स्वयं को हिन्दू, बनारसी अथवा गुजराती की जगह 'गंगू' (गांगेय) कहना पसन्द करते हैं तथा भारत की सांस्कृतक पहचान को सिन्धु के स्थान पर गंगा से सम्बद्ध करने की पैरवी करते हैं। पुस्तक में पैंतालिस आलेखों को संकलित किया गया है जिनमें कुछ अंग्रेजी में भी हैं। इसके अतिरिक्त स्व० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० आनन्दकृष्ण तथा डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी के भी लेख संकलित हैं। 'गंगा : कला और साहित्य में' शीर्षक से श्री सी० शिवराम मूर्ति की अंग्रेजी पुस्तक 'गंगा' का सार भी संकलित किया गया है।

एरिकन्यूबी की 'गंगा' का सार संक्षेप स्पेन में प्रकाशित पुस्तक 'फुल्टन एण्ड द होली रिवर' का अनुवाद भी महत्त्वपूर्ण संकलन है। पुस्तक का कलेवर शोध एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सरीखा है। विषय वस्तु तथा विस्तार इसे सम्पूर्ण गंगा वांग्मय के निकट खड़ा करती है। पुण्य सलिला गंगा का किंचित ही कोई पक्ष होगा जिस पर लेखक की दृष्टि न पड़ी हो। भारतीय संस्कृति तथा धार्मिक, साहित्यिक ग्रन्थों में गंगा की स्थिति तथा उसकी महिमा के अवलोकन के साथ ही काशी का गंगा मणिकांचन संयोग की यह पुस्तक पूर्ण सन्दर्भों के साथ विवेचना करती है।

उल्लेख्य ग्रन्थ गंगा एवं काशी का अतीत भर नहीं है बल्कि इसके वर्तमान पर श्वेत पत्र तथा भविष्य का दृष्टि पत्र होने की भी सम्भावना है। लेखक प्रदूषण का शिकार होती पवित्र जलधारा के भविष्य को लेकर भी चिन्तित है तथा पीड़ा की यही अनुभूति इस ग्रन्थ का मुख्य स्वर तथा इसकी रचना के पीछे की मूल प्रेरणा भी है। लेखक ने अपनी भावनाओं एवं आशंकाओं को केवल गंगा के पौराणिक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने, समझने का भी प्रयास किया है तथा इसके प्रदूषण से काशी के जन-जीवन पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रभावों की भी चर्चा की है। साथ ही साहित्य, कला, संग्रहालयों तथा डाक टिकटों आदि में गंगा के विविध स्वरूप को भी संकलित किया है। 'भावी गंगा' शीर्षक से आलेख में गंगा तथा घाटों के पुनरुद्धार की परियोजना भी प्रस्तुत की गयी है। विविध चित्रों के संकलन के माध्यम से पुस्तक समृद्ध हुई है। भाषा सरल और सुबोध है। यह पुस्तक अपनी मौलिक संरचना के माध्यम से एक महत्वपूर्ण विषय पर प्रामाणिक ग्रन्थों के अभाव की पूर्ति करती है।

'हिन्दुस्तान से'

आषाढ़स्य प्रथम दिने
(कविता संग्रह)

मूल लेखक
नारायण सुमंत
अनुवादक
गिरीश काशिद

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-407-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 80.00

नारायण सुमंत का व्यवसाय खेती और पशुपालन है। बी०काम० करने के बाद भी ये खेती करते हें। यह भी अनोखी बात थी। किन्तु अब खेती और पशुपालन व्यवसाय है। विज्ञान से जुड़ा है क्योंकि परंपरित खेती का स्थान नयी तकनीकी खेती ने ले ली है। पहले खेती पर्याप्त थी। पशुपालन, खेती की उपयोता भर। किन्तु अब दोनों ही व्यवसाय है। घरेलू पशु, व्यवसायी पशु। सामान्य उपज, नगदी खेती। पशुपालन तो स्पष्ट ही नगदी का धन्धा है। सुमंत की कविताओं पर इनका प्रभाव है।

सुमंत मराठी हैं। आधुनिक अर्थात् तकनीकी खेतिहर हैं। तकनीकी खेती के लाभ हैं। हानियाँ भी हैं। सुमंत की कविता में गाँव का आधुनिक जीवन व्यक्त है। परंपरित खेती का किसान लोकगीत में सिमटा रहता था। ये कविताएँ किसी भी शहरी कविता के स्तर की है। अत: इनका स्वाद ग्राम, नगर दोनों का है।

सुमंत ने सम्भवत: पहली बार ग्राम भाव को नगरी स्तर दिया है। पहली ही कविता में किसान के बौद्धिक एवं अर्थ शोषण की कथा है, किसान को झूठा आश्वासन मिल रहा है। इसे कवि ने 'पेपर हार्स' से व्यक्त किया है। किसान की भयावह स्थिति व्यंग्य बनकर व्यक्त हुई है—

हैबती आतंकित है,
बैंक के जीपों और
क्रेडिट बैंक के नोटिसों से
दौलती की दौलत
पहले ही बन चुकी है
हवाबंद गोश्त

सुमंत किसान आन्दोलन से भी जुड़े हें। किन्तु कविता में केवल किसान की बात करते हैं, आन्दोलन की नहीं। यह संग्रह कविता के नगरी और मध्यवर्गी पटल पर भिन्न रंग, रूप, आस्वाद देता है। **—युगेश्वर**

पृष्ठ 1 का शेष

में बरेली के पास उन्होंने प्राण त्याग दिये। पं० विद्यानिवास का सूत्र—'काशी जीने के लिए है, मरने के लिए नहीं'—घटित हुआ। चतुर्वेदीजी ने जीवन के महत्त्वपूर्ण वर्ष काशी में ही व्यतीत किए। साहित्य, संस्कृति, कला और संगीत के क्षेत्रों में उनका विशिष्ट अवदान है। काशी के सुप्रतिष्ठित मनीषी साहित्यकारों का उन्हें सान्निध्य प्राप्त था। जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' में उन्होंने महामात्य राक्षस का अभिनय किया था। नाट्यशास्त्र पर उनका साधिकार ग्रन्थ है। वे 'अभिनव भरत' के नाम से विद्वत समाज में सम्बोधित होते थे। उनमें पूर्व और पश्चिम की नाट्य शैली का अद्‌भुत समन्वय था। 27 जनवरी 1907 को जन्मे चतुर्वेदीजी ने सन् 1970 में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। महामना पं० मदनमोहन मालवीय की उन पर अशेष कृपा थी। उन्होंने मालवीयजी पर अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन किया, मालवीयजी की जीवनी भी लिखी। मालवीयजी के पत्र 'सनातन धर्म' का सम्पादन किया। उन्होंने मालवीयजी की जीवन शैली को अपनाया। उसी प्रकार की वेशभूषा और व्यवहार भी उनका था।

विक्रम संवत् 2000 पूर्ण होने पर चतुर्वेदीजी ने अखिल भारतीय विक्रम परिषद की स्थापना की। सन् 1944 में परिषद से टीका सहित कालिदास ग्रन्थावली डाक व्यय सहित छ: रुपये मात्र में सुलभ करायी जो आज भी मेरी निधि बनी हुई है।

चतुर्वेदीजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित ट्रेनिंग कालेज के वरिष्ठ प्राध्यापक थे। उन्हीं की सहायता से सुमधुर कवि हरिवंश राय बच्चन का उस कालेज में प्रशिक्षणार्थी के रूप में प्रवेश हुआ था। उन्होंने विभिन्न विषयों पर लगभग 125 पुस्तकों की रचना की। वे अन्त तक रचनाशील थे। उनके निधन से काशी का युग समाप्त हो गया जिसमें पूरी शताब्दी के साहित्य, कला, संस्कृति की स्मृतियाँ सुरक्षित थीं। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

eJeMJeeJeAeeueUe JeeIee

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने मासिक प्रायोगिक पत्र निकाला है। यह विद्यापीठ के पत्रकारिता विभाग की प्रयोगशाला का उत्साहवर्द्धक प्रकाशन है। 'विश्वविद्यालय वार्ता' में विद्यापीठ की समस्त गतिविधियों का समावेश है। इससे पत्रकारिता विभाग की कुशल अभिव्यक्ति-क्षमता का बोध होता है।

सामान्यत: पत्रकारिता विभाग सैद्धान्तिक प्रशिक्षण देता है। प्रायोगिक प्रशिक्षण न होने से जब छात्र किसी पत्रसमूह में प्रवेश करते हैं तब उन्हें कठिनाई महसूस होती है। प्रस्तुत पत्रिका इस दिशा में प्रशंसनीय प्रयास है। दो रंग में सुन्दर ढंग से मुद्रित यह 'वार्ता' विद्यापीठ में स्थापित प्रेस की क्षमता का भी बोध कराता है।

पुस्तक-परिचय

हैलो! जिन्दगी

प्रकाशक : भगवती पॉकेट बुक्स
11/7, डॉ० रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2

पृष्ठ : 76 मूल्य : 50.00

पुस्तक का शीर्षक देखकर इसके अंतरंग विषयों की जानकारी नहीं होती, किन्तु विषयस्थिति कुछ और है। इसके लेखक राजीव अग्रवाल भारतीय संस्कृति के अध्येता और चिन्तक हैं। इन्होंने जीवनव्यापी मूल तत्त्वों—सत्य, मन, स्तुति, मौन, कर्म, आत्मशक्ति, सेवा जैसे इकहत्तर विषयों का तात्त्विक विवेचन किया है। जीवन-यात्रा में इन तत्त्वों के पालन और आचारपूर्वक ग्रहण करने से ब्रह्म और धर्मतत्त्वों को समझने में बल मिलता है। आत्मबोध के लिए जिज्ञासुओं के लिए पुस्तक पठनीय है। **—पानासि**

कालजयी सनातनधर्म

प्रकाशक : **मानव प्रबोधन प्रन्यास,**
श्रीलालेश्वर महादेव मन्दिर, शिवमठ,
शिववाड़ी, बीकानेर-334 003

पृष्ठ : 304 मूल्य : 150.00

श्रीलालेश्वर महादेव मन्दिर, शिववाड़ी, बीकानेर के महन्त पद पर प्रतिष्ठित स्वामी संवित् सोमगिरि ने 10 अगस्त 2001 को विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी के आमन्त्रण पर दश प्रवचन किये थे। प्रस्तुत ग्रन्थ उन्हीं प्रवचनों का संग्रह है। सनातनधर्म का आधार वेद है। वेद सनातन, अनन्त और अपौरुषेय माना जाता है। धर्म की आत्मा वेदान्त दर्शन है। जीव, जगत और ईश्वर के आधार में एक अद्वितीय पूर्ण सच्चिदानन्द ब्रह्म है। **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्** आधार है। स्वामीजी ने ब्रह्म और धर्म का इस ग्रन्थ में सविस्तर विवेचन किया है। इन प्रवचनों में समस्त तत्त्वों का विद्वतापूर्ण आलोड़न, विश्लेषण है। धर्म के सम्बन्ध में जिज्ञासा की पूर्ति करनेवाला यह प्रवचन-ग्रन्थ निश्चित भाव से पठनीय और संग्रहणीय है। इस ग्रन्थ की विशेषता अमृततुल्य स्थान है ही, प्रवचनकर्त्ता स्वामी संवित् सोमगिरिजी असामान्य व्यक्तित्व के धनी हैं। जयनारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर के अभियांत्रिकी संकाय के व्याख्याता-पद का त्याग कर आपने स्वामी ईश्वरानन्द गिरि महाराज से **परमहंस संन्यास** की दीक्षा ग्रहण कर ब्रह्मचर्य आश्रम से संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। आपने लगभग चौबीस वर्ष तक अर्बुदाचल (आबू पर्वत) की तपोभूमि में वेदान्त का अध्ययन और साधना की। स्वामीजी का इतना ही परिचय पर्याप्त है उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का। सनातन धर्म के पोषक और पालकों के लिए यह ग्रन्थ निर्मल भाव से पठनीय है **—पानासि**

हिन्दी साहित्य

कितना विराट घाट है यह
कितने सारे तख़्त
बहती हुई अजस्र धारा
अनादि। अनन्त।

गन्ध, दीप, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य से
परिपूर्ण तीर्थस्थली

कितने सारे यजमान
हाथ बाँधे, सिर झुकाये, मोक्ष के मोह में

कितने सारे पण्डे
जो केश ही नहीं
बस चले तो मूँड लें अधोकेश।

—नीलाभ

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **मार्च 2005** **अंक : 3**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

RNI No. UPHIN/2000/10104

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi.(0542)2421472,2413741,2413082,(Resi.)2436349,2436498,2311423 ● Fax(0542)2413082